**ओ३म्**

**-हरिद्वार अर्धकुम्भ में आर्यसमाज की भव्य व विशाल शोभायात्रा-**

**गंगा में स्नान से किसी श्रद्धालु के पाप नहीं कटतेः स्वामी आर्यवेश**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

हरिद्वार के अर्धकुम्भ व आर्यसमाज के स्थापना दिवस 10 अप्रैल के अवसर आज यहां आर्यसमाज की भव्य व विशाल शोभायात्रा एवं नगर कीर्तन में भाग लेने का अवसर मिला। कुछ कारणों से हमारी बस विलम्ब से पहुंची अतः हम शोभायात्रा आरम्भ होने के कुछ समय बाद ही उसमें सम्मिलित हो सके। इस समय शोभायात्रा गंगा के तट व एक पुल पर है जहां एक कार के ऊपर बैठे हुए श्री सत्यव्रत सामवेदी जी महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक कुछ तथ्यों को सामने खड़ी आर्यजनता को बता रहे हैं। इनसे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी मंत्री श्री विट्ठलराव जी ने आर्यों को सम्बोधित किया। हमनें आर्य भाईयों से उनके सम्बोधन के बारे में पूछा तो सभी ने उनके सम्बोधन को तथ्यपूर्ण एवं अति प्रभावशाली बताया। सामवेदी जी के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान यशस्वी स्वामी आर्यवेश जी का सम्बोधन वहीं सड़क पर शोभायात्रा को रोककर हुआ। **स्वामीजी ने कहा कि गंगा में स्नान करने से गंगा के श्रद्धालुओं के पाप कटने वाले नहीं है। बुराईयों को छोड़े बिना कोई मनुष्य पाप से मुक्त नहीं हो सकता है।** उन्होंने कहा कि यहां आये हुए भाई बहिनों में देहरादून से भी बड़ी संख्या में लोग आयें हैं जिनमें गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी और द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की छात्रायें व उनकी विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा जी भी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान माननीय श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी वागेश्वर से अपने साथियों के साथ आयें हैं जिनमें कुमाऊं व निकटवर्ती पर्वतीय स्थानों के अनेक भाई व बहिनें भी हैं। आज की शोभायात्रा में 15 प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अनेक सभासद व सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि व गणमान्य व्यक्ति भी इस भव्य शोभायात्रा के साक्षी बने हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि हमारे सामने के चण्डी मन्दिर में स्वामी दयानन्द जी ने तप किया था। इसी स्थान पर स्वामी दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर दुनियां के पाखण्डों व अन्य मत-मतान्तरों को चुनौती दी थी। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी व उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर ही हम यहां अर्धकुम्भ के अवसर पर वेद प्रचार का शिविर चला रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने इस विशाल एवं व्ययसाध्य कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के प्रधान गोविन्द सिंह भण्डारी के सहयोग की सराहना की। स्वामीजी का व्याख्यान पूरा होने पर उन्होंने लोगों में जोश भरने के लिए अनेक नारे लगाये जिनमें से कुछ थे, **‘‘कन्या भू्रण हत्या मिटायेंगे, जातिवाद मिटायेंगे, आर्य राष्ट्र बनायेंगे, पाखण्डवाद मिटायेंगे, वैदिक धर्म फैलायेंगे, गोहत्या बन्द करो, बन्द करो और पाखण्डवाद मिटाने को ऋषि दयानन्द आये थे।”** इन जयघोषों व नारों को लोगों ने इतने उत्साह से लगाया कि हम भी अपने आप को रोक न सके और हमने भी अपनी पूरी शक्ति से इन नारों में भाग लिया। शोभा यात्रा अनेक मार्गों से होती हुए व ऋषि का जयघोष करती हुई शिविर में पहुंची जहां स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त विचार रखे। आर्यजनता को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम व हमारे अनेक साथी यहां विपरीत परिस्थितियों में विगत लगभग 1 माह से तप कर रहे हैं। भीषण गर्मी, आंधी व अनेक विपरीत स्थितियों को यहां हमारे साथियों ने सहन किया है। स्वामीजी ने कहा कि यह हमारे शिविर का स्थान ऐसा हैं जहां महर्षि दयानन्द के जीवन की घटनाओं, आत्मा व परमात्मा का चिन्तन करने पर ध्यान लगता है। यहां विगत दिनों चारों वेदों के सभी मन्त्रों से यज्ञ सम्पन्न हुआहै। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी ने यहां की भूमि व वातावरण को वेदों की ऋचाओं से गुंजा दिया है। स्वामी आर्यवेश जी ने जयघोष लगाया तो भावविभोर लोगों ने वैदिक धर्म की जय की ध्वनि अपनी पूरी शक्ति से की जिससे सभा मण्डप का वातवारण ऋषि भक्ति के रंग में रंग गया। स्वामी जी ने आर्यसमाज सागर मध्यप्रदेश का परिचय देते हुए बताया कि सागर ऐतिहासिक नगर है और वहां एक शानदार आर्यसमाज है। वहां से 6-7 लोग हरिद्वार में सार्वदेशिक सभा की बैठक व शोभा यात्रा में भाग लेने पधारे हैं। उन्होंने अर्धकुम्भ-मेले पर की गई व्यवस्था में सहयोग के रूप में ग्यारह हजार रूपयों की धनराशि स्वामी आर्यवेश जी को प्रदान की। अन्य कुछ लोगों ने भी अपनी-अपनी ओर से सहयोग राशियां प्रदान की जिनका परिचय स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धालुओं को कराया।

**आर्य विद्वान पं. सत्यव्रत सामवेदी ने शोभायात्रा के मध्य एक वाहन की छत पर बैठकर अपने प्रवचन में योगेश्वर श्री कृष्ण की चर्चा करते हुए कहा कि वह गोपाल थे।** **गोपाल गाय का पालन करने वाले को कहते है। अतः योगेश्वर श्री कृष्ण जी गोपालन करते थे। हमें उनसे प्रेरणा लेकर गोपालन करना चाहिये। श्री सामवेदी जी ने कहा कि ईश्वर यज्ञमय है, इसलिए हमें व आप को भी यज्ञ बनना है। उन्होंने कहा कि यदि हम सब यज्ञ करेंगे तो देश में सूखा नही पड़ेगा, भुखमरी नहीं होगी व किसान आत्म हत्या नहीं करेंगे। गोरक्षा से किसान समृद्ध होगा।** अनेक राज्यों में शराब बन्दी की भी उन्होंने चर्चा की और सारे देश में शराबबन्दी किए जाने की मांग की। श्री सामवेदी जी ने श्री गुरुचरण छागला जी की चर्चा कर बताया कि उन्होंने शराब बन्दी के लिए आमरण अनशन किया और अपने प्राण दिये। आपने कहा कि आज देश में बहुत सारे समुदाय हैं परन्तु यहां आर्यसमाज का एक ओ३म् का ही झण्डा चहुंओर फहरा रहा है जो पाखण्ड खण्डन व ऋषि की दिग्विजय का सूचक है। **उन्होंने कहा कि जब तक हमारे आर्यसमाज जीवित है, हमारे देश का भविष्य उज्जवल है। अपने विचारों को विराम देने से पूर्व उन्होंने कहा कि हमारा सफर तब तक चलेगा जब तक कि हम पूरे विश्व को आर्य नहीं बना लेंगे।**

**देश विदेश में आर्यसमाज के प्रचारक आर्य विद्वान श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने** अपने सम्बोधन में कहा कि जिस प्रकार के विचारों व ज्ञान की आवश्यकता आज देश व समाज को है, उस प्रकार के विचारों को आप यहां हरिद्वार के अर्धकुम्भ के शिविर के अवसर पर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी है। आप इतिहास पर दृष्टि डालिये। विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं। उन्होंने अनेक अच्छे कार्य किए हैं। यदि उन सभी महापुरुषों की तुलना स्वामी दयानन्द जी से करेंगे तो पायेंगे की ऋषि दयानन्द जी का स्थान बहुत ऊंचा है। उनके विचार सभी विषयों पर बहुत ऊंचे हैं और साथ हि मानव जाति के लिए कल्याणकारक भी हैं। ऋषि दयानन्द के विचारों का अध्ययन करने पर यह तथ्य भी सामने आता है कि उनके विचार विज्ञान पर आधारित हैं। उनके विचारों में विज्ञान विरोधी कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि विश्व के विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के वेद विषयक विचारों पर अपनी सम्मति दी है जो कि अतीव महत्वपूर्ण व प्रशंसा से युक्त है। आचार्य धर्मपाल शास्त्री ने योगी अरविन्द के विचारों को प्रस्तुत किया। **अरविन्द जी ने कहा है कि ऋषि दयानन्द को वेदों के समझने की कुंजी प्राप्त थी। वेद के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द को उन्होंने पर्वतों की सबसे ऊंची चोटी की उपमा देकर गौरवान्वित किया है।** श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, राम व कृष्ण के भक्तों ने अपने इन गुरुओं की मट्टी पलीद की। ऋषि दयानन्द ने इन महापुरुषों को कीचड़ से निकाला और यह सब पतित पावन बने। **श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द तो सर्वत्र पावन ही पावन थे। महर्षि दयानन्द एक ऐसे अनोखे ऋषि थे जिन्होंने अपनी पूजा नहीं चलाई और देश की भलाई के लिए अपनी राख को भी किसी किसान के खेत में खाद के रूप में उपयोग करने की बात कही थी।** श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि आज लोग हमारा स्वागत, सम्मान व सत्कार करते हैं परन्तु हमारे ऋषि का स्वागत व सम्मान तो लोग पत्थर, धूल, तलवार व विष देकर करते थे। **विद्वान वक्ता ने कहा कि हम जो अच्छे विचार व उपदेश सुनें उनका मनन करें व उसे अपने जीवन में आत्मसात करें। उन्होंने कहा कि संसार की सभी समस्यायें मत, पन्थ व सम्प्रदायों की देन हैं।** शराब और गोहत्या की चर्चा कर इन शराब व गोमांसाहार के व्यस्नों को उन्होंने हानिकारक व निन्दनीय बताया। महर्षि दयानन्द जी द्वारा बनाये गये आर्यसमाज के शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति के नियम व इससे होने वाले लाभों की चर्चा भी उन्होंने की और अपने वक्तव्य को विराम देते हुए कहा कि **महर्षि दयानन्द ने वेदप्रचार करने के लिए आर्यसमाज रूपी वृक्ष लगाया था। श्री धर्मपाल आर्य जी का व्याख्यान आरम्भ होने से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध प्रदेश की ओर से शाल ओढ़ाकर उनका सम्मान भी किया गया।**

**द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल देहरादून की विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा** ने अपने व्याख्यान का आरम्भ ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात तपसोऽध्यजायत मन्त्र से किया। उन्होंने कहा कि हम सब हरिद्वार में वेद प्रचार के लिए उपस्थित हुए हैं। वेद प्रचार करके हमें अज्ञान व अन्धकार को दूर करना है। महर्षि दयानन्द की भी हमारे लिए वेद प्रचार करने की आज्ञा है। हमें लोगों के अज्ञान में डूबने के कारणों को जानकर उन्हें अज्ञान में न पड़ने के लिए प्रचार करना है। जो लोग अज्ञान में भटक रहे हैं उन्हें अज्ञान से बाहर निकालना है। विदुषी वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज का उद्देश्य वेदों का प्रचार व प्रसार है। परमात्मा ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान दिया है। वेदों ने मनुष्यों को सुखी व कल्याणप्रद जीवन जीने की कला सिखाई है। वेद संगच्छध्वं अर्थात् मिल कर चलने का सन्देश देते हैं। आर्यसमाज अच्छे लोगों का संगठन है। हम सब भारत माता के पुत्र व पुत्रियां हैं। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज का व्यापक प्रचार प्रसार हो तो लोग एक ईश्वर को मानने लगेंगे। वेद गो माता और अन्य सभी पशुओं की रक्षा का सन्देश देते हैं। उन्होंने कहा आजकल लोग संस्कारों से विहीन होने के कारण मातृशक्ति का सम्मान नहीं करते। **महर्षि दयानन्द ने स्त्री को यज्ञ की ब्रह्मा बनने का सम्मान देकर गौरवान्वित किया है। विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द न आते तो हम वेदों के मन्त्रों के अर्थ न जान पाते और न हि यज्ञ की ब्रह्मा बन पाते। उन्होंने कहा कि आज नारियां यज्ञों की ब्रह्मा बन नहीं है जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है।** उन्होंने उज्जैन में आयोजित कुम्भ मेले की चर्चा की और बताया कि वहां होने वाले सभी वृहत् यज्ञों की ब्रह्मा स्त्रियों को ही बनाया गया है जिसमें से वह भी एक हैं। उन्होंने संगठन को सुदृण करने और वेद प्रचार को बढ़ाने का आह्वान किया। डा. अन्नपूर्णा जी ने भारत को विश्वगुरु और देश को आर्य राष्ट्र बनाने का आह्वान किया।

**आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री कमलनारायण जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि महर्षि दयानन्द** **सर्वोत्तम जीवन जीने की शैली वा विद्या Art of Living के प्रणेता थे।** महर्षि के इन विचारों से विश्व में क्रान्ति हुई। विद्वान वक्ता ने आधुनिक जीवन पद्धति की चर्चा की और इसे ग्लोबल वार्मिगं जैसी पर्यावरण की समस्या का कारण बताया। लातूर और मराठवाड़ा में सूखे की स्थिति व वहां जल के अभाव का उल्लेख कर उन्होंने इसे प्रकृति का असन्तुलन बताया। उन्होंने आज के लोगों को विशेषण दिया **‘सम्पन्न जीवन विपन्न विचार’** और कहा कि आज के समाज व विश्व में विचारों की विपन्नता होने के कारण नाना समस्यायें पैदा हो रही है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य और अपने अन्य ग्रन्थों में विचार प्रस्तुत किये हैं जिनसे वर्तमान समय की अनेक समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। विद्वान वक्ता ने महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य 11/3 का उल्लेख कर कहा कि वायुमण्डल में सुगन्धित पदार्थों से यज्ञ करना चाहिये व वनस्पतियों के गुण-धर्म जानकर उनका शारीरिक चिकित्सा में उपयोग कर संसार को सुखी व समस्याओं से रहित बनाया जाना चाहिये। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और भरत जी के संवाद की चर्चा कर उन्होंने बताया कि रामचन्द्र जी ने भरत जी से पूछा था कि तुमने यज्ञ कराने वाले विद्वान पुरुषों की नियुक्ति की या नहीं? वायु प्रदुषण की चर्चा कर श्री कमल नारायण जी ने कहा कि सरकारी स्तर पर यज्ञ होने से पर्यावरण विषयक शुभ परिणाम मिल सकते हैं अत यज्ञ किया जाना चाहिये। लोगों को उस राजनीतिक दल को वोट देकर सरकार बनानी चाहिये जिसने अपने घोषणा पत्र में देश भर में सरकारी व्यय से यज्ञ करने का वचन दिया हो। उन्होंने कहा कि यदि धनायन वाले वायु कणों की उपस्थिति में श्वांस लेंगे तो तनाव व अनिद्राग्रस्त होकर रोगग्रस्त सकते हैं। इसके विपरीत ऋणायन वाली वायु के कणों में श्वांस लेने से मनुष्य को सुख, चैन, शान्ति का लाभ होता है व मनुष्यों की सारी बिमारियां दूर होती हैं। विद्वान वक्ता ने अग्निहोत्र यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण भी किया और कहा कि महर्षि दयानन्द के यज्ञ विषयक विचारों पर वैज्ञानिक अनुसंधान किया जाना चाहिये और उसके आधार पर मनुष्यों का जीवन सुखी बनाने के लिए उनका व्यवहार व उपयोग किया जाना चाहिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि हमें यज्ञ व संस्कारों के माध्यम से वेदों की विचारधारा को आगे बढ़ाना चाहिये। व्याख्यान से पूर्व स्वामी आर्यवेश जी ने श्री कमलनारायण, प्रधान छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा का परिचय देते हुए बताया गया कि उन्होंने पर्यावरण विज्ञान पर पीएचडी की है। उनका शोध प्रबन्ध प्रकाशित भी हो चुका है। आपने अर्धकुम्भ मेले की व्यवस्था के लिए सार्वदेशिक सभा को ग्यारह हजार रूपयों की धनराशि भी भेंट की।

इस अवसर पर देहरादून के पं. उम्मेदसिंह विशारद ने **‘देश धर्म व जाति की जिसने बचाई लाज है, वह आर्यसमाज है जी आर्यसमाज है’** गीत प्रस्तुत किया। श्री किशनलाल जी आर्य, भोपाल, मध्य प्रदेश ने भी **‘वेद विरुद्ध जितने मजहब थे खोल दी है उनकी सबकी पोल, स्वामी जी ने चलाया है 14 गोली का पिस्तौल’** गीत गाकर लोगों में जोश व उत्साह उत्पन्न किया। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री किशनलाल जी की प्रशंसा करते हुए उनके अनेक गुणों पर प्रकाश डाला। महाशय राजपाल जी भजनोपदेशक ने **‘धक्के खाते रहे हैं दुनियां क लोगों मिल करके बोलो ओ३म् ओ३म् ओ३म् प्यारा ओ३म् ओ३म् ओ३म्’** एवं **‘यदि नहीं टंकारे आती फाल्गुन की शिवरात हमारी कौन पूछता बात’** भजनों को प्रस्तुत किया। आर्यजगत के एक अन्य भजनोपदेशक श्री रुहेल सिंह जी ने भी अनेक प्रभावशाली भजन प्रस्तुत किए।

यह उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के तत्वावधान में अर्धकुम्भ हरिद्वार के मेले में 20 मार्च से निरन्तर प्रचार चलता रहा है। 13 अप्रैल, 2016 को मेला समाप्त हो रहा है। इस अवधि में आर्यसमाज के अनेक लोगों ने यहां की विपरीत परिस्थितियों में सभा के शिविर में रहकर घोर तप किया है जिनमें से एक श्री दिक्षेन्द्र आर्य भी हैं। आप जिस उत्साह वह श्रद्धाभक्ति से कार्य करते हैं, वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। उनके कार्य व सेवा भावना को देख व अनुभव कर हममें उनके प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न हुई है। इससे यह भी सन्देश मिला कि आर्यसमाज के लोगों को राग-द्वेष छोड़कर परस्पर मिलकर व एक दूसरे को परख कर ही किसी के प्रति अपनी कोई निजी राय बनानी चाहिये। ऐसा करके हम संगठन को मजबूत करने के साथ आर्यसमाज के प्रचार को भी बढ़ा सकते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं कि हम दूसरों के अवगुणों की चर्चा करने के स्थान पर अपने अवगुणों पर ध्यान दे और उन्हें दूर करने का प्रयास करें तो यह आर्यसमाज के हित में होगा। यह बात अवश्य है कि असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन आवश्यक है परन्तु असत्य के खण्डन में हमारा अपना असत्य भी सम्मिलित है। सार्वदेशिक सभा इस बात के लिए आर्यसमाज व आर्यजगत के सभी ऋषिभक्तों की ओर से धन्यवाद की पात्र है जिसने महर्षि दयानन्द द्वारा सन् 1867 को स्थापित कुम्भ मेले में प्रचार की इस परम्परा का पूरी श्रद्धा व निष्ठा से पालन किया। इस शिविर व इसके कार्यकलापों में सहयोग करने वाले व इससे किसी भी रूप में जुडें बन्धुओं सहित सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्री गोविन्दसिंह भण्डारी एवं श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी आदि सभी महानुभावों के प्रति भी हम अपनी कृतज्ञता व धन्यवाद करते है्र जिन्होंने अपने जीवन का समय, श्रम व धन आदि इस कार्य में लगाकर इसे सफल बनाया है।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**